IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मंटो रचित 'हतक' कहानी की नायिका 'सुगन्धी' की मनोदशा

इन्दु बाला

शोधार्थी

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय , रोहतक

एक अहसास... एक भाव... एक महत्त्वकांक्षा, एक उम्मीद एक ख्वाब और एक हकीकत... एक अनुभूत सत्य । शायद यह एक पल ही है जो मानव के मन में ज्वार की भाँति उफनता, उबरता रहता है। एक यही पल है जो उसकी चेतनता और अचेतनता को झकझोर देता है। यही एक पल है जो किसी भी साधारण व्यक्ति को महामानव और प्रसिद्ध बना देता है। इसी एक पल में जीकर तुलसीदास महाकवि हुए। इसी एक अहसास को समझ महाकवि पन्त ने लिखा "वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान...।" इसी अनुभूति को अनुभव कर आदिकवि वाल्मिकी एक डाकू से ब्रह्मर्षि की उपाधि पर आसीन हुए। इस 'एक पल' की महिमा का बख़ान मैं जितना करूँगी उतनी ही इस गहराई में उतरती जाऊँगी... मेरे शब्द... मेरी क्षमता सब इस 'एक पल' में समाहित होते चले जाएँगे और फिर भी लिखने को अनन्त शेष रह जाएगा. क्योंकि जितना भी किताबी ज्ञान पाया है उसके अनुसार भी और जितना अनुभव - अर्जित ज्ञान है उसके अनुसार भी सिर्फ 'एक पल' का सत्य ही जाना है-

यह समझा है कि सिर्फ 'एक पल' आपके अस्तित्व को सम्पूर्णतः बदल देने की क्षमता रखता है।

मंटो को पढ़ते-पढ़ते जब उनके प्रशंसकों और आलोचकों को पढ़ने लगी तो देवेन्द्र सत्यार्थी की कुछ पंक्तियों में उलझ कर रह गई... यही पंक्तियाँ मेरा 'एक पल' बनी जिन्होंने मुझे सौंगधी तक पहुँचाया। देवेन्द्र सत्यार्थी के अनुसार, "मंटो मरने के बाद खुदा के दरबार में पहुँचा तो बोला, तुमने मुझे क्या दिया... बयालिस साल। कुछ महीने, कुछ दिन। मैंने सुगन्धी को सदियाँ दी है।"[1]

'सुगन्धी की सदियाँ' यहीं से मैंने तलाश आरम्भ कर दी सुगन्धी की... उसके उस अस्तित्व की जो अब तक भुलाया नहीं जा सका। इसी अस्तित्व की तलाश में पहली कड़ी जो मेरे हाथ लगी वह 'कुमार पाशी' की एक नज़्म थी जो उन्होंने मंटो की कहानी 'हतक' की नायिका 'सौगंधी' पर लिखी थी–

"इक एक मौसम मेरे दिल के अन्दर
इक मौसम मेरे बाहर
इक रस्ता मेरे पीछे भागे
इक रस्ता मेरे आगे
बीच में चुपचाप खड़ी हूँ,
जैसे बूझी हुई बुझारत
किसको दोष दूँ ?
जाने मुझको किसने किया अकारत
आईना देखूँ, बाल संवारूँ, लब पर हँसी सजाऊँ
गला सड़ा वही गोश्त कि जिस पर
सादे रंग चढ़ाऊँ
जाने कितनी बर्फ़ पिघल गई – बह गया कितना पानी
किस दरिया में ढूँढू बचपन
किस दरिया में जवानी
रात आए; मेरी हड्डियाँ जागें
दिन जागे; मैं सोऊँ
अपने उजाड़ बदन से लगकर
कभी हसूँ, कभी रोऊँ
एक भयानक सपना; आग में लिपटी जलती जाऊँ
चोली में उड़से सिक्कों के संग पिघलती जाऊँ

इक मौसम... इक रस्ता मेरे आगे

रस्ते बीच में खड़ी अकेली

पिया न संग सहेली

क्या जाने मुझ जनमजली ने क्या अपराध किया है

आखिर क्यों दुनिया का मैंने सारा जहर पिया है

मेरे साथ ज़माने तूने अच्छा नहीं किया है

दूर खडे मेरे आँगन द्वारे पल पल पास बुलाएँ

कहो हवाओं से अब...

उनको दूर बहुत ही दूर कहीं ले जाएँ

झूट की यह तारों दीवारें

झूट की यह फर्श और छत है

झूट का बिस्तर, झूट के साथी

झूट की हर संगत है

झूट बिछाऊँ, झूठ लपेटूँ

झूट उतारूँ, पहनूँ

झूट पहन कर जिस्म के वीराने में दौड़ती जाऊँ

क्यों नहीं जहन की दीवारों से टकराऊँ, मर जाऊँ

शमां सरीखी पिघल रही हूँ

ओझल कभी उजागर

इक मंज़र मेरे दिल के अंदर

इक मंज़र मेरे बाहर

मुझको ढूँढने कौन आए अब इन तनहां राहों पर

बोटी-बोटी कट गई मेरी रौशन चौराहों पर

अब गहरे सन्नाटे में किसको आवाज़ लगाऊँ

कौन आएगा मदद को मेरी

क्या चीखूँ, चिल्लाऊँ

अपने गोश्त की मैली चादर

ओढ़ के चुप सो जाऊँ

और अचानक नींदों के दलदल में गुम हो जाऊँ

खुद को खुद में ढूँढने निकलू

लेकिन कहीं न पाऊँ..."[2]

-कुमार पाशी

कुमार पाशी की इस इक नज़्म ने 'सुगन्धी' की मनः स्थिति की सारी कहानी बयां कर दी है। नज़्म की एक-एक पंक्ति, सुगन्धी के जीवन के अफ़साने की हक़ीक़त उसके जहनी दर्द की पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। यह आपके – हमारे समक्ष उन परिस्थितियों, उन हालातों का वर्णन प्रस्तुत करती है, जिनसे गुज़रकर सुगन्धी को जीवन की राह मिली थी।

'मण्टो की कहानी 'सुगन्धी' में एक तरफ जहाँ अनुभव की सच्चाई है वहीं दूसरी तरफ सुगन्धी पर हुए जुल्म की पीड़ा भी है। वेश्याओं पर अनेकानेक कथाकारों द्वारा कलम चलाई गई है। परन्तु मंटो द्वारा लिखी गई कहानियाँ वेश्याओं के जीवन की सच्ची और सपाट बयानी है। '...हतक में मंटो के दृष्टिकोण की लगभग सभी विशेषताएँ है – आक्रोश, दर्द और अपार मानवीयता । वेश्यावृति की जलालत का ऐसा अपूर्व चित्र मंटो ने इसमें खींचा है कि सेठ द्वारा सुगन्धी को नापसन्द कर दिए जाने वाले प्रसंग के बाद पाठक अनायास सुगन्धी के दिल की कुढ़न और उसके फूट पड़ते आक्रोश के सहभागी बन जाते है। मंटो ने कहानी में स्पष्ट रूप से दो वर्गों का चित्रण किया है – पहला वह जो शोषण करता है, जो खरीदार है और जो चूंकि पैसे देता है, इसीलिए वह अपनी पसन्दगी या नापसन्दगी जाहिर कर सकता है। दूसरा वर्ग सुगन्धी का है, जो ज़लालत भरी जिन्दगी जीते हुए भी, मानवीयता से रहित नहीं है, लेकिन जो इस शोषण का शिकार बनने – बिकने के लिए मजबूर है। सुगन्धी इस दूसरे वर्ग में है और चूँकि वह सेठ से अपने अपमान का बदला नहीं ले पाती, इसीलिए उसका सारा गुस्सा माधो पर उतरता है जो सुगन्धी का सिर्फ आर्थिक शोषण ही नहीं करता वरन उसकी सहज अच्छाई का भी फायदा उठाता है। माधो के प्रति सुगन्धी के मन में जो गुस्सा है- वह दरअसल मंटो के अन्तर का आक्रोश है जिसे वह उस सारी व्यवस्था के मुँह पर जैसे एक जन्नाटे के थप्पड़ की तरह जड़ देता है।'[3]

सुगन्धी एक सरल महिला थी उसे वह चालाकी नहीं आती थी जो वेश्याओं में स्वभावतः होती है। परन्तु वह स्वयं को चालाक दिखाना पसन्द करती थी। अपनी भावनाओं को छिपाकर सदैव उसकी कोशिश रहती थी कि खुद को बुद्धिमति साबित कर सके।

'सुगन्धी दिमाग में ज्यादा रहती थी, लेकिन जैसे ही कोई नर्म– नाजुक बात – कोई कोमल बोल– उससे कहता, वह झट पिघल कर अपने शरीर के दूसरे हिस्सों में फैल जाती। हालाँकि उसका दिमाग मर्द–औरत के शारीरिक सम्बन्ध को एकदम बेकार की चीज़ समझता था, पर उसके शरीर के बाकी अंग सब–के–सब इसके बुरी तरह कायल थे। वे थकन चाहते थे – ऐसी थकन, जो उन्हें झकझोर कर उन्हें मार कर सोने पर मजबूर कर दे। ऐसी नींद जो थक कर चूर -चूर होने के बाद आये, कितनी मजेदार होती है... वह बेहोशी, जो मार खा कर जोड़–जोड़ ढ़ीले हो जाने के बाद छा जाती है, कितना आनन्द देती है। कभी ऐसा लगता है कि तुम हो, कभी ऐसा लगता है कि तुम नही हो और इस होने और न होने के बीच कभी - कभी ऐसा महसूस होता है कि तुम हवा में बहुत ऊँची जगह लटके हुए हो। ऊपर हवा, नीचे हवा, दायें हवा, बायें हवा, बस हवा ही हवा। और फिर उस हवा में दम घुटना भी एक खास मजा देता है।'[4]

सुगन्धी जैसी महिलाएँ अपनी जरूरतों से ज्यादा अपनों की जरूरत का ख़्याल करती है। कहानी में जब रामलाल आकर, थकी हुई सुगन्धी को उठाता है, वह सोचती है – 'साढे सात रूपये का सौदा था। सुगन्धी उस हालत में, जबकि उसके सिर में बेहिसाब दर्द हो रहा था, कभी स्वीकार न करती, लेकिन उसे रुपयों की सख्त़ ज़रूरत थी। उसके साथ वाली खोली में एक मद्रासी औरत रहती थी, जिसका पति मोटर के नीचे आकर मर गया था। उस औरत को अपनी जवान लड़की के साथ अपने घर जाना था, लेकिन उसके पास चूँकि किराया नहीं था, इसीलिए वह असहाय अवस्था में पड़ी थी। सुगन्धी ने कल ही उसको ढ़ाढ़स दिया या और उससे कहा था, " बहन, तू चिन्ता न कर । मेरा आदमी पूने से आने वाला है। मैं उससे कुछ रूपये लेकर तेरे जाने का बन्दोबस्त कर दूंगी।"

...माधो पूना से आने वाला था, पर रुपयों का प्रबन्ध तो सुगन्धी को ही करना था।'[5]

'हतक' की नायिका सुगन्धी में जहाँ एक तरफ दर्द, आक्रोश और पीड़ा की अधिकता है, वहीं दूसरी ओर व मानवीयता की प्रतिमूर्ति है। वह सेठ द्वारा नापसन्द किए जाने के विरोध में अपने भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करती हुई कहती है– 'उसे... सिर्फ मेरी शक्ल ही पसन्द नहीं आयी... नहीं आई तो क्या हुआ?... मुझे भी तो कई आदमियों की शक्ल पसन्द नहीं आती... वह, जो अमावस की रात को आया था। कितनी बुरी सूरत थी उसकी - क्या मैंने नाक– भौं नहीं चढ़ायी थी? जब वह मेरे साथ सोने लगा था तो मुझे घिन नहीं आयी थी?... क्या मुझे उबकाई आते–आते नहीं रुक गयी थी?... ठीक है, पर सुगन्धी... तूने उसे दुत्कारा नहीं था, तूने उसे ठुकराया नहीं था...'[6]

सेठ की अस्वीकार्यता ने सुगन्धी का परिचय स्वयं से करवा दिया, इसी कारण वह माधो को अपनी जिन्दगी से निकाल पाई, जो प्रेम के नाम पर लगातार उसका आर्थिक, मानसिक और शारीरिक शोषण कर रहा था। अब सुगन्धी सारे आवरण उतार फेंकना चाहती थी और अपनी जिन्दगी की हकीकत का सामना करना चाहती थी।

'बड़ी देर तक वह बेंत की कुर्सी पर बैठी रही। सोच-विचार के बाद, जब उसको अपना मन बहलाने का कोई तरीका न सूझा तो उसने अपने खाज - मारे कुत्ते को गोद में उठाया और सागौन के चौड़े पलँग पर उसे बगल में लिटा कर सो गई।'[7]

'सुगन्धी' के रूप में मंटो ने हमारा परिचय एक वेश्या से नहीं करवाया, अपितु एक मानवीयता की प्रतिमूर्ति से करवाया है। एक वेश्या कैसे अस्वीकृति का दंश झेलकर आत्म - मुक्ति तक पहुँच सकती है, इस तथ्य की कल्पना सिर्फ मंटो ही कर सकते थे।

इसी कारण, उनकी 'हतक' कहानी विश्व-साहित्य में स्थान पाने की योग्यता रखती है।

सन्दर्भ सूची

1. मुशर्रफ़ आलम ज़ौक़ी, सम्पादन, दो क़ौमें, सआदत हसन मंटो, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 2019, मुख पृष्ठ
2. जानकी पुल.com, मंटो की कहानी 'हतक' और कुमार पाशी की नज़्म, 'सुगन्धी, मई 11, 2017
3. सआदत हसन मंटो, तीन मोटी औरतें, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, भूमिका (नीलाभ), संस्करण 2018
4. वही, पृ॰ - 58
5. वही, पृ॰ - 62
6. वही, पृ॰ - 64 - 65
7. वही, पृ॰ - 72